



कपास की खेती के लिए १७ सितम्बर से २३ सितम्बर २०२६ तक चौदहवीं साप्ताहिक सलाह

अ. मृदा स्वास्थ्य, पोषण, कीट और रोग प्रबंधन पर सामान्य सलाह

कपास की अधिक पैदावार संतुलित मृदा पोषण, जल प्रबंधन और सक्रिय, निगरानी-आधारित कीट एवं रोग प्रबंधन पर निर्भर करती है। एक समग्र और एकीकृत फसल प्रबंधन योजना को लागू करने से उचित वृद्धि और मजबूती सुनिश्चित होती है, लागत कम होती है और फसल को विनाशकारी कीटों और रोगों से होने वाले नुकसान से बचाया जा सकता है।

मृदा स्वास्थ्य एवं पोषण प्रबंधन (आईएनएम)

- **सूक्ष्म पोषक तत्वों का अनुकूलन करें:** फसल चक्र, जैविक संशोधनों और आवरण फसलों को प्राथमिकता देकर और बुवाई से पहले मिट्टी परीक्षण के आधार पर तर्कसंगत रासायनिक उर्वरक का उपयोग करके मिट्टी के स्वास्थ्य में सुधार करें।
- **सूक्ष्म पोषक तत्वों का प्रयोग करें:** आवश्यकतानुसार लक्षित पर्ण स्प्रे के माध्यम से द्वितीयक और सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी (जैसे जस्ता, बोरॉन, मैंगनीज और मैग्नीशियम) को सक्रिय रूप से दूर करें।

रोग प्रबंधन (आईडीएम)

- **निवारक उपायों को अपनाएं:** मिट्टी जनित और पर्ण जनित दोनों प्रकार के रोगजनकों का प्रबंधन एकीकृत कृषि पद्धतियों के माध्यम से किया जाना चाहिए, जिसमें उचित खेत की स्वच्छता और पौधों के स्वास्थ्य को बढ़ाने और रोग की घटनाओं को कम करने के लिए बीज और मिट्टी के उपचार के रूप में जैव कीटनाशकों और जैव उर्वरकों का अनुप्रयोग शामिल है।
- **पत्तों पर होने वाले प्रकोपों को नियंत्रित करें:** उच्च आर्द्रता की अवधि के दौरान नियमित रूप से खेत की निगरानी की जानी चाहिए, और अनुशंसित फफूंदनाशकों का प्रयोग विवेकपूर्ण तरीके से केवल तभी किया जाना चाहिए जब प्रचलित पर्यावरणीय परिस्थितियां रोग के तेजी से विकास और प्रसार के लिए अनुकूल हों।

एकीकृत कीट प्रबंधन (आईपीएम)

- **क्षेत्र निरीक्षण करें:** थ्रिप्स, चेपा, तेला और स्पाइडर माइट्स जैसे चूसने वाले कीटों के साथ-साथ सुंडी की निगरानी के लिए साप्ताहिक क्षेत्र निरीक्षण करें।
- **जाल और जैव-कीटनाशकों का उपयोग करें:** वयस्क पतंगों की उड़ान पर नज़र रखने, अंडे देने के चक्रों का अनुमान लगाने और प्राथमिक प्रतिक्रिया के रूप में जैविक, प्राकृतिक या पौधों पर आधारित कीटनाशकों का प्रयोग करने के लिए मौसम की शुरुआत में ही फेरोमोन जाल लगाएं।
- **प्राकृतिक शत्रुओं का संरक्षण करें:** लेडी बीटल, लेसविंग्स और बिग-आइड बग जैसे लाभकारी कीटों की रक्षा के लिए व्यापक-स्पेक्ट्रम फ़ार्मूलों के बजाय अत्यधिक चयनात्मक कीटनाशकों का चयन करें।
- **रासायनिक हस्तक्षेपों को सीमित करें:** लेबल पर अनुशंसित रासायनिक कीटनाशकों का उपयोग सख्ती से अंतिम उपाय के रूप में करें, और उनका केवल तभी उपयोग करें जब कीटों की संख्या निर्धारित आर्थिक दृष्टि से नुकसानदायक सीमा स्तर सीमा तक पहुंच जाए।

ब. स्थान-विशिष्ट सलाह

हरियाणा		पिछले सप्ताह में वास्तविक वर्षा (मिमी)							अगले सप्ताह अनुमानित वर्षा (मिमी)				
		सितम्बर							सितम्बर				
		08	09	10	11	12	13	14	16	17	18	19	20
	हिसार	0	0	0	0	0	0	0	0	5.4	9.5	1.8	0
	जींद								0	6.1	5.8	0.9	0
	सिरसा								0	7.2	14	2.1	0
	रोहतक	0	0	0	0	0	0.6	1	0.1	2.4	6.1	1	0
वर्षा की मात्रा एवं रंग कोड		0.1 to 2.4 मिमी		2.5 to 15.5 मिमी		15.6 to 64.4 मिमी		64.5 to 115.5 मिमी		115.6 to 204.4 मिमी			
वर्षा श्रेणी		बहुत हल्की वर्षा		हल्की वर्षा		मध्यम वर्षा		भारी वर्षा		बहुत भारी वर्षा			

फसल की स्थिति:

हिसार में, फसल अभी डोडा बनने से लेकर डोडा खुलने की अवस्था में है (112 से 147 दिन की)। कुछ खेतों में तुड़ाई का काम चल रहा है। इस दौरान निराई-गुड़ाई, कीटनाशक का छिड़काव, पतियों पर छिड़काव और सिंचाई (जहाँ बारिश नहीं हुई थी) जैसे काम किए गए। ज्यादातर खेतों में खरपतवार की समस्या है। कई खेतों में सफेद मक्खी की संख्या नुकसान पहुँचाने वाले स्तर से ऊपर पाई गई; साथ ही हनी ड्यू और सूटी मोल्ड (काली फफूंदी) के लक्षण भी दिखे, खासकर उन जगहों पर जहाँ समय पर रोकथाम के उपाय नहीं किए गए थे। कई खेतों में हरे बॉल्स में गुलाबी सुंडी का असर नुकसान पहुँचाने वाले स्तर के करीब देखा गया। कुछ खेतों में बॉल सड़ने की समस्या के साथ-साथ कॉटन लीफ कर्ल वायरस का असर भी कम मात्रा में देखा गया। कुछ खेतों के कुछ हिस्सों में जड़ सड़न और विल्ट की समस्या भी देखी गई।

सिरसा में, फसल अभी डोडा बनने और विकसित होने की अवस्था में है (121 से 141 दिन की)। सर्वे की गई सभी जगहों पर पहली तुड़ाई का काम चल रहा है। इस दौरान मौसम में बादल छाए रहे और गर्मी, उमस व सूखापन रहा। कीड़ों और बीमारियों के लिए छिड़काव के साथ-साथ सूक्ष्म पोषक तत्वों का पतियों पर छिड़काव भी किया गया। जिन कपास के खेतों में पौधों की संख्या कम थी, वहाँ कुछ जगहों पर खरपतवार की समस्या देखी गई। हरा तेला की संख्या 01-11 प्रति तीन पतियाँ रही; सफेद मक्खी की संख्या 12-48 प्रति तीन पतियाँ रही जो नुकसान पहुँचाने वाले स्तर से ऊपर थी; और थ्रिप्स की संख्या 01-10 निम्फ और वयस्क प्रति तीन पतियाँ रही जो नुकसान पहुँचाने वाले स्तर से ऊपर थी। गुलाबी सुंडी का असर भी नुकसान पहुँचाने वाले स्तर से ऊपर पाया गया, जिससे 05-30% हरे बॉल्स को नुकसान पहुँचा। सर्वे की गई जगहों पर कॉटन लीफ कर्ल वायरस का असर बहुत कम देखा गया।

सलाह:

हिसार में किसानों को कपास की फसल में सिंचाई करने की सलाह दी जाती है। फल लगने के अंतिम अवस्था के दौरान 7 से 10 दिनों के अंतराल पर 13:00:45 @ 2 किलोग्राम प्रति एकड़ का पर्ण छिड़काव करें। उचित वृद्धि प्राप्त करने के लिए जरूरत के आधार पर 2.0% यूरिया और 0.5% जिंक सल्फेट 21% का छिड़काव भी किया जा सकता है। उचित चरणों में कसोला से हाथ से निराई-गुड़ाई करें। रस चूसने वाले कीटों की आबादी आर्थिक दहलीज़ को पार कर रही है। 20 पौधों/एकड़ पर रस चूसने वाले कीटों (थ्रिप्स, व्हाइटफ्लाई और हरा तेला) की निगरानी करने की आवश्यकता है। हरा तेला और सफेद मक्खी को नियंत्रित करने के लिए, फ्लोनिक्मिड 50 डब्ल्यूजी @ 80 ग्राम प्रति एकड़ और एफिडोपाइरोपेन 50 जी/एल डीसी @ 400 मिलीलीटर का छिड़काव करें। निम्फ के आबादी के साथ सफेद मक्खी के मध्यम से उच्च संक्रमण के मामले में, पाइरिप्रोक्सीफेन 10 ईसी @ 400 मिलीलीटर या

स्पाइरोमेसिफेन 240 एससी @240 मिलीलीटर प्रति एकड़ का छिड़काव करें। कीटनाशकों के टैंक मिश्रण का अनुसरण न करें। चूंकि गुलाबी इल्ली का प्रकोप दिखाई देने लगा है, इसलिए 2 प्रति एकड़ की दर से फेरोमोन ट्रैप लगाएं। गुलाबी बॉलवर्म संक्रमण के लिए प्रति एकड़ कम से कम 100 फूल या 20 हरे बॉल्स की जांच करें। फूल आने की शुरुआती अवस्था में ही संक्रमित और रोसेट फूलों को इकट्ठा करें और नष्ट कर दें। यदि फूल/गुच्छों में गुलाबी सुंडी का संक्रमण आर्थिक सीमा (>5%) से अधिक हो जाए, तो इमामेक्टिन बेंजोएट 5एसजी @100 ग्राम या प्रोफेनोफॉस 50 ईसी @ 5.00 मिली/एकड़ या क्विनालफॉस 20 एएफ @4.00 मिली प्रति एकड़ का छिड़काव करें। पिछले छिड़काव के 10-12 दिनों के बाद वैकल्पिक कीटनाशक का अनुवर्ती छिड़काव किया जा सकता है। जड़ सड़न और मुरझान से प्रभावित क्षेत्रों में, प्रभावित जड़ों को कार्बेन्डाजिम 50 डब्ल्यूपी @ 1.2 ग्राम/लीटर पानी से भिगोएं। यदि पैराविल्ट दिखाई देता है, तो लक्षण विकसित होने के तुरंत बाद एक सप्ताह के अंतराल पर कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 50% डब्ल्यूपी @ 250 ग्राम या कार्बेन्डाजिम 50% डब्ल्यूपी @ 100 ग्राम प्लस यूरिया 2 किलोग्राम प्रति 100 लीटर पानी के घोल से 2-3 बार छिड़काव करें। नमी के उचित रूप से सूखने के बाद तनाव-मध्यस्थता वाले अच्छे खुले हुए गूलरों को चुनना शुरू करें। बॉल रॉट के प्रबंधन के लिए, कार्बेन्डाजिम 12%+मैन्कोजेब 63% WP @30g का पर्ण छिड़काव, इसके बाद प्रोपीनेब 70% डब्ल्यूपी @25-30g या प्रोपिकोनाज़ोल 25% ईसी @10ml या एज़ोक्सीस्ट्रोबिन 18.2% w/w+डाइफेनोकोनाज़ोल 11.4% w/w एससी @10ml या फ्लक्सपायरोक्सैड 167 का छिड़काव करें। ग्राम/लीटर + पाइराक्लोस्ट्रोबिन 333 ग्राम/लीटर एससी @ 6 मिली 10 लीटर पानी में, विशेष रूप से फूल आने के 60-120 दिनों के दौरान और मौसम की स्थिति के अनुसार। यदि कालिखयुक्त फफूंद विकसित हो जाए, तो 10-15 दिनों के अंतराल पर प्रोपिकोनाज़ोल 25% ईसी @10ml/10L (500ml/ha) या कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 50% डब्ल्यूपी @25g/10L (1250g/ha) के 1-2 रोगनिरोधी/चिकित्सीय स्प्रे लगाएं।

सिरसा में, किसानों को सलाह दी जाती है कि वे ज़रूरत के हिसाब से खेतों में सिंचाई करें और अगर नाइट्रोजन वाले फर्टिलाइज़र की कोई बची हुई डोज़ देनी हो, तो उसे दें। अगर अचानक पौधे मुरझाने लगें या पत्तियां पीली या लाल पड़ने लगें, तो हल्की सिंचाई करें और प्रति एकड़ 15-20 किलो यूरिया का छिड़काव करें। एनपीके (13:00:45) 2 किलो और मैग्नीशियम सल्फेट (MgSO₄) 1 किलो को प्रति एकड़ 200 लीटर पानी में मिलाकर 2-3 बार फोलियर स्प्रे (पत्तों पर छिड़काव) करें; यह छिड़काव हर हफ्ते दोहराएं। 'पैराविल्ट' के लक्षण दिखने पर, लक्षण दिखने के तुरंत बाद से हर हफ्ते 2-3 बार कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 50% डब्ल्यूपी (250 ग्राम) या कार्बेन्डाजिम 50% डब्ल्यूपी (100 ग्राम) और यूरिया (2 किलो) को प्रति 100 लीटर पानी में मिलाकर ड्रिचिंग (जड़ों के पास डालना) करें। या फिर, लक्षण दिखने के तुरंत बाद (24 घंटे के अंदर) प्रभावित पौधों पर कोबाल्ट क्लोराइड (10 मिलीग्राम प्रति लीटर पानी, यानी 100 लीटर पानी में 1 ग्राम) या सोडियम बेंजोएट (50 मिलीग्राम प्रति लीटर पानी, यानी 100 लीटर पानी में 5 ग्राम) का छिड़काव करें। सफ़ेद मक्खी की संख्या पर खुद नज़र रखें और/या प्रति एकड़ 8-10 पीले स्टिकी ट्रैप का इस्तेमाल करें; साथ ही, खेत की मेड़ों और आस-पास की जगहों को सफ़ेद मक्खी के दूसरे वैकल्पिक पोषक पौधे से मुक्त रखें। हरा तेला और थ्रिप्स जैसे रस चूसने वाले कीटों की भी निगरानी करते रहें; इसके लिए प्रति एकड़ 20 पौधों और हर पौधे की नीचे की तीन पत्तियों की जांच करें। सफ़ेद मक्खी के वयस्क कीटों के नियंत्रण के लिए, प्रति एकड़ 200 लीटर पानी में इनमें से कोई एक दवा मिलाएं और छिड़काव करें: डिनोटेफुरन 20 एसजी (60 ग्राम), फ्लोनिक्मिड 50 डब्ल्यू जी (80 ग्राम), एफिडोपाइरोपेन 50G/L (400 मिलीलीटर), डायफेन्थियुरोन 50 डब्ल्यूपी (200 ग्राम - सिंचाई या बारिश के कारण सही नमी होने पर ही इस्तेमाल करें), या प्रोफेनोफॉस 50 ईसी (500 मिलीलीटर)। अगर सफ़ेद मक्खी के निम्फ ज़्यादा हों और पत्तियाँ चिपचिपी, चमकदार और तैलीय दिखें, तो वयस्क

मक्खियों को नियंत्रित करने के लिए पाइरीप्रॉक्सीफेन 10 ईसी @500ml या बुप्रोफेज़िन 25 एससी @400 ml या स्पाइरोमेसिफेन 22.9 SC 240 ml प्रति एकड़, 200 लीटर पानी में मिलाकर स्प्रे करें। सूटी मोल्ड (sooty mold) होने पर, प्रोपिकोनाज़ोल 25 ईसी @ 1 ml/लीटर या कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 50 डब्ल्यूपी @2.5 g/लीटर का 10-15 दिनों के अंतराल पर एक या दो बार स्प्रे करें। जहाँ जैसिड की संख्या आर्थिक सीमा स्तर (2 निम्फ/पत्ती) से ज्यादा हो जाए, वहाँ टॉल्फेनपाइराड 15 ईसी @ 300-400 ml या फेनपाइरोक्सिमेट 5 ईसी @ 300 ml या डिनोटेफुरन 20 एसजी @ 60 g/प्रति एकड़, 200 लीटर पानी में मिलाकर स्प्रे करके इसे नियंत्रित करें। सफ़ेद मक्खी की आबादी पर नज़र रखने के लिए प्रति एकड़ 8-10 पीले चिपचिपे ट्रैप लगाएँ। थ्रिप्स और गुलाबी सुंडी की शुरुआती बढ़ती आबादी को नियंत्रित करने के लिए 5% नीम के बीज के अर्क या एज़ाडिराक्टिन 1500 ppm (0.15% ईसी) @ 5ml/लीटर पानी का स्प्रे करें। पिंग बॉलवर्म (pink bollworm) की आबादी को नियंत्रित करने के लिए इमामेक्टिन बेंजोएट 5 SG @ 100 g या स्पिनेटोरम 11.7 एससी @170 ml या प्रोफेनोफोस 50 ईसी @ 500 ml प्रति एकड़ का स्प्रे करें और प्रति एकड़ 200 लीटर पानी का इस्तेमाल करें। देसी (arboreum) कपास में स्पॉटेड बॉलवर्म को नियंत्रित करने के लिए, जब 5% फल लगने वाले हिस्सों (या गिरे हुए फल) को नुकसान पहुँचे, तो स्पिनोसैड @ 75 ml/प्रति एकड़, 200 लीटर पानी में मिलाकर स्प्रे करें। भारी बारिश और जलभराव की स्थिति में, फसल को नुकसान से बचाने के लिए खेत से अतिरिक्त पानी निकालने के लिए उचित जल निकासी की व्यवस्था करें। जड़ सड़न और विल्ट बीमारी के प्रकोप पर नियमित रूप से नज़र रखें। शुरुआती लक्षण वाले और उनके आस-पास के पौधों पर ट्राइकोडर्मा एसपीपी. का घोल डालें। जड़ सड़न और विल्ट बीमारी की रोकथाम के लिए 10 लीटर पानी में 1% डब्ल्यूपी @ 50 ग्राम या कार्बेन्डाजिम 50% डब्ल्यूपी @ 12 ग्राम का इस्तेमाल करें।

राजस्थान		पिछले सप्ताह में वास्तविक वर्षा (मिमी)							अगले सप्ताह अनुमानित वर्षा (मिमी)				
		सितम्बर							सितम्बर				
		08	09	10	11	12	13	14	16	17	18	19	20
	अजमेर	0	0	0	0	0	5.2	0	6.6	3.2	4.4	5.1	0.2
	जोधपुर	0	0	0	0	0	11.2	0	0.6	0.1	1.3	1.8	0.1
	नागौर								0.8	0.3	3.6	1.9	0.1
	पाली	0	0	0	0	0	7	0	4.3	3.6	5.8	4.5	0.1
	श्रीगंगानगर	3.8	0	0	0	0	0	0	0	7	12	2.3	0.1
वर्षा की मात्रा एवं रंग कोड		0.1 to 2.4 मिमी		2.5 to 15.5 मिमी		15.6 to 64.4 मिमी			64.5 to 115.5 मिमी		115.6 to 204.4(मिमी)		
वर्षा श्रेणी		बहुत हल्की वर्षा		हल्की वर्षा		मध्यम वर्षा			भारी वर्षा		बहुत भारी वर्षा		

फसल की स्थिति:

श्रीगंगानगर और हनुमानगढ़ ज़िलों में, फसल 117 से 133 दिन की है और इस समय इसमें बॉल (टिंडे) बनने से लेकर उनके फटने की अवस्था चल रही है। समय पर बोई गई फसल में तुड़ाई का काम चल रहा है। जैसिड की संख्या 0.0 से 2.00 प्रति तीन पत्तियां, व्हाइटफ्लाई का प्रकोप 0.00 से 16.00 प्रति तीन पत्तियां और थ्रिप्स की संख्या 0.00 से 4.00 प्रति तीन पत्तियां देखी गई।

बांसवाड़ा में, फसल 71 से 77 दिन की है और फूल आने व बॉल (टिंडे) बनने की अवस्था में है। खेत साफ़-सुथरे हैं। रस चूसने वाले कीटों के लिए समय पर छिड़काव किया गया था। खरपतवार का कोई प्रकोप नहीं है। रस चूसने वाले कीटों में, कपास के खेतों में व्हाइटफ्लाई का प्रकोप दिखना शुरू हो गया है, लेकिन यह आर्थिक नुकसान के स्तर से नीचे है। जैसिड का प्रकोप आर्थिक नुकसान के स्तर से ऊपर था। बीमारियों का कोई प्रकोप नहीं है।

सलाह:

श्रीगंगानगर और हनुमानगढ़ जिलों में किसानों को सलाह दी जाती है कि वे फसल में कीटों और बीमारियों की नियमित निगरानी करें। जिन जगहों पर पिछले साल गुलाबी सुंडी (पिंक बॉलवर्म) का प्रकोप देखा गया था, वहां इस साल भी इसके प्रकोप पर कड़ी नज़र रखने की ज़रूरत है। गुलाबी सुंडी की गतिविधि पर नज़र रखने के लिए 5 गंध पाश/फेरोमोन ट्रैप प्रति हेक्टेयर लगाएं। अगर 100 फूलों में से 5 से ज़्यादा फूल 'रोज़ेट' (गुलाब की तरह मुड़े हुए) दिखें या सुंडी का प्रकोप 5% से ज़्यादा हो, तो प्रोफेनोफोस 50% ईसी (2.5 मिली/लीटर) या एमामेक्विन बेंजोएट 5 एसजी (0.50 ग्राम/लीटर) या इंडोक्साकार्ब 14.5 एससी (1.0 मिली/लीटर पानी) का छिड़काव करें। जैसिड और सफेद मक्खी को नियंत्रित करने के लिए फ्लोनिक्मिड 50 डब्ल्यू जी (0.40 ग्राम/लीटर) या एफिडोपाइरोपेन 50 डीसी (1.50 मिली/लीटर पानी) या थियामेथोक्सम 24 डब्ल्यू जी (0.5 ग्राम/लीटर पानी) का छिड़काव करें; वहीं सफेद मक्खी के निम्फ (बच्चे) के मामले में पाइरीप्रॉक्सीफेन 10% ईसी (2.5 मिली/लीटर) या स्पाइरोमेसिफेन 22.9 एससी (1.25 मिली/लीटर पानी) का छिड़काव करें। थ्रिप्स का प्रकोप आर्थिक नुकसान का स्तर से ज़्यादा होने पर स्पिनेटोरम 11.7 एससी (0.84 मिली/लीटर) या प्रोफेनोफोस 50 ईसी (2.5 मिली/लीटर पानी) का छिड़काव करें। अगर सूटी मोल्ड (काली फफूंदी) की समस्या दिखे, तो 10-15 दिनों के अंतराल पर प्रोपिकोनाज़ोल 25% ईसी (10 मिली/10 लीटर या 500 मिली/हेक्टेयर) या कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 50% डब्ल्यूपी (25 ग्राम/10 लीटर पानी या 1250 ग्राम/हेक्टेयर) का 1-2 बार बचाव या इलाज के तौर पर छिड़काव करें। अगर अचानक पौधे मुरझाने लगें या पत्तियां पीली या लाल पड़ने लगें, तो हल्की सिंचाई करें और 15-20 किलोग्राम यूरिया प्रति एकड़ बिखेरें। प्रति एकड़ 200 लीटर पानी में 2 किग्रा एनपीके (13:00:45) और 1 किग्रा मैग्नीशियम सल्फेट (MgSO₄) मिलाकर 2-3 बार फोलियर स्प्रे (पत्तों पर छिड़काव) करें; इसे हर हफ्ते दोहराएं। अगर पैराविल्ट के लक्षण दिखें, तो लक्षण दिखने के तुरंत बाद से हर हफ्ते 2-3 बार ड्रैचिंग (जड़ों के पास घोल डालना) करें। इसके लिए 100 लीटर पानी में 250 ग्राम कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 50% डब्ल्यूपी या 100 ग्राम कार्बेन्डाजिम 50% डब्ल्यूपी के साथ 2 किग्रा यूरिया मिलाकर घोल तैयार करें। या फिर, लक्षण दिखने के तुरंत बाद (24 घंटे के अंदर) प्रभावित पौधों पर कोबाल्ट क्लोराइड (10 मिलीग्राम प्रति लीटर, यानी 100 लीटर पानी में 1 ग्राम) या सोडियम बेंजोएट (50 मिलीग्राम प्रति लीटर, यानी 100 लीटर पानी में 5 ग्राम) का स्प्रे करें।

दक्षिणी राजस्थान (बांसवाड़ा, भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़, डूंगरपुर, प्रतापगढ़, राजसमंद, सलूबर और उदयपुर) में, जहाँ नमी वाली मिट्टी में हाथ से खरपतवार निकालना संभव नहीं है, किसानों को सलाह दी जाती है कि वे खरपतवारनाशक का इस्तेमाल करें। अगर खेत में घास-फूस वाले खरपतवार हैं, तो 'क्विज़ालोफॉप एथिल 5% ईसी' (2 मिली/लीटर पानी) का इस्तेमाल करें; चौड़ी पत्ती वाले खरपतवारों के लिए 'पाइरिथियोबैक सोडियम 10% ईसी' (1.25 मिली/लीटर पानी) का इस्तेमाल करें; और दोनों तरह के खरपतवारों को नियंत्रित करने के लिए 'पाइरिथियोबैक सोडियम 6% ईसी + क्विज़ालोफॉप एथिल 4% ईसी' (2-2.5 मिली/लीटर पानी) का इस्तेमाल करें। कपास के खेतों में रस चूसने वाले कीटों के हमले के संकेतों पर नज़र रखें। अगर कीटों का हमला आर्थिक नुकसान का स्तर से ज़्यादा हो जाए, तो उन्हें नियंत्रित करने के लिए 5% नीम के बीज के अर्क (एनएसकेई) या 'एज़ाडिराक्विन 1500 ppm' (0.15%

ईसी) (5 मिली/लीटर पानी) का छिड़काव करें। सफेद मक्खी और जैसिड को नियंत्रित करने के लिए प्रति एकड़ 8-10 पीले चिपचिपे ट्रैप लगाएं। अगर रस चूसने वाले कीट आर्थिक नुकसान के स्तर से ज्यादा हो जाएं, तो इनमें से किसी एक कीटनाशक का छिड़काव करें: 'बुप्रोफेज़िन 25 ईसी' (1.25 लीटर/हेक्टेयर) या 'डायफेन्थियुरोन 50 डब्ल्यूपी' (625 ग्राम/हेक्टेयर) या 'फ्लोनिक्मिड 50 डब्ल्यू जी' (200 ग्राम/हेक्टेयर)। गुलाबी सुंडी की निगरानी के लिए गंध पाश (5/हेक्टेयर) लगाएं। गुलाबी सुंडी के हमले पर नियमित रूप से नज़र रखें और प्रभावित फूलों (चक्रपत्री पुष्प/रोज़ेट फूल) को इल्ली के साथ नष्ट कर दें।

मध्य प्रदेश		पिछले सप्ताह में वास्तविक वर्षा (मिमी)							अगले सप्ताह अनुमानित वर्षा (मिमी)				
		सितम्बर							सितम्बर				
		08	09	10	11	12	13	14	16	17	18	19	20
	खरगौंव	12	0	0	0	0	12.8	38	1.2	0.4	1.5	1	2.4
	धार	0	0	0	0	3	60.4	18	1	1.9	1.4	4.5	7.5
	खांडवा	0	0	0	0	0	0	0	1.1	0.8	0.7	1.4	4.9
वर्षा की मात्रा एवं रंग कोड		0.1 to 2.4 मिमी		2.5 to 15.5 मिमी		15.6 to 64.4 मिमी			64.5 to 115.5 मिमी		115.6 to 204.4 मिमी		
वर्षा श्रेणी		बहुत हल्की वर्षा		हल्की वर्षा		मध्यम वर्षा			भारी वर्षा		बहुत भारी वर्षा		

फसल की स्थिति:

खंडवा में, बोई गई फसल 63 से 111 दिन की है और फूल आने की अवस्था में है। जहाँ ज़रूरत हो, वहाँ चुनिंदा जगहों पर खरपतवार हटाने और फर्टिगेशन (सिंचाई के साथ खाद देना) का काम किया जा रहा है। खेतों में मौसमी खरपतवार उग आए हैं। कुछ खेतों में हरा तेला, एफिड और सफेद मक्खी का प्रकोप देखा गया है। अब तक किसी बीमारी की सूचना नहीं मिली है।

सलाह

खंडवा में किसानों को समय पर खरपतवार हटाने की सलाह दी जाती है। अगर मिट्टी में नमी के कारण हाथ से खरपतवार हटाना संभव न हो, तो खरपतवार नाशक का इस्तेमाल करें: घास वाले खरपतवार के लिए 'क्विज़ालोफॉप एथिल 5% ईसी' (2 मिली/लीटर पानी), चौड़ी पत्ती वाले खरपतवार के लिए 'पाइरिथियोबैक सोडियम 10% ईसी' (1.5 मिली/लीटर पानी), और दोनों तरह के खरपतवारों को नियंत्रित करने के लिए 'पाइरिथियोबैक सोडियम 6% + क्विज़ालोफॉप एथिल 4% एमईसी' (2-2.5 मिली/लीटर पानी) का इस्तेमाल करें। गुलाबी सुंडी (पिंक बॉलवर्म) की निगरानी के लिए प्रति एकड़ 2 फेरोमोन ट्रैप लगाएं। नाइट्रोजन की 25% मात्रा को कॉलम विधि से 10 से 15 सेमी की गहराई पर दें। रस चूसने वाले कीटों को नियंत्रित करने के लिए एनएसकेई 5% + नीम का तेल (5 मिली/लीटर) या नीम के तेल पर आधारित फॉर्मूलेशन (300 या 1500 ppm, 5 मिली/लीटर) + 1.0 ग्राम लॉन्ड्री डिटर्जेंट इमल्शन का इस्तेमाल करें। यदि पैराविल्ट (अचानक मुरझाना) के लक्षण दिखें, तो लक्षण दिखने के तुरंत बाद से एक सप्ताह के अंतराल पर कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 50% डब्ल्यूपी (250 ग्राम) या कार्बेन्डाजिम 50% डब्ल्यूपी (100 ग्राम) के साथ यूरिया (2 किग्रा) को 100 लीटर पानी में मिलाकर 2-3 बार ड्रैचिंग (जड़ों के पास घोल डालना) करें। लंबे समय तक सूखा रहने पर, फल लगने की मुख्य अवस्था में 7 से 10 दिनों के अंतराल पर 200 लीटर पानी में 13:00:45 (2 किग्रा प्रति एकड़) का फोलियर स्प्रे (पत्तों पर छिड़काव) करें। यदि 'स्क्वायर ड्रॉप' (कली का गिरना) दिखाई दे, तो कपास की कलियों और फूलों को प्राकृतिक रूप से गिरने से बचाने के लिए NAA (4 मिली/10 लीटर पानी) का फोलियर स्प्रे करें। पत्तों पर फंगस के धब्बों और बॉल रॉट (boll rot) की रोकथाम के लिए, मौसम के

अनुसार 10 लीटर पानी में इनमें से किसी एक का छिड़काव करें: कार्बेन्डाज़िम 12% + मैकोज़ेब 63% डब्ल्यूपी (30 ग्राम), प्रोपिनेब 70% डब्ल्यूपी (25-30 ग्राम), प्रोपिकोनाज़ोल 25% ईसी (10 मिली), एज़ोक्सीस्ट्रोबिन 18.2% w/w + डाइफेनोकोनाज़ोल 11.4% w/w एससी (10 मिली), या फ्लक्सापाइरॉक्सेड 167 ग्राम/लीटर + पाइराक्लोस्ट्रोबिन 333 ग्राम/लीटर एससी (6 मिली)

कपास उत्पादन तकनीक, जैसे मिट्टी का चयन, किस्में, उर्वरकों का प्रयोग, बुवाई के तरीके, सिंचाई प्रणाली, खरपतवारों, कीटों और रोगों का प्रबंधन आदि की विस्तृत जानकारी आईसीएआर-सीआईसीआर, नागपुर द्वारा विकसित एंड्रॉइड आधारित सीआईसीआर कॉटन ऐप से प्राप्त की जा सकती है। इस ऐप को गूगल प्ले स्टोर से निःशुल्क डाउनलोड किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त, फसल वृद्धि अवस्था विशिष्ट और मौसम आधारित साप्ताहिक सलाह आईसीएआर-सीआईसीआर की वेबसाइट (<https://cicr.org.in/resource-weekly-advisory>) पर भी अपलोड की जाती है ताकि किसानों के लाभ के लिए परामर्श किया जा सके।

Advisory issued by:

Dr. Vijay N. Waghmare

Director, ICAR-Central Institute for Cotton Research, Nagpur

Compilation by Dr. Isabella Agarwal

Editing Team:

Dr. G. T. Behere	Dr. A. S. Tayade	Dr. A. H. Prakash	Dr. S.K. Verma
Dr. S.K. Sain	Dr. Rishi Kumar	Dr. Babasaheb B. Fand	Dr. Ramkrushna GI
Dr. S.P. Gawande	Dr. Shivaji Thube	Dr. R.R. Chapke	

Regional language translation:

Hindi	: Mr Ghanshyam Deogirikar & Mr Ashutosh Mishra
Punjabi	: Dr Amarpreet Singh
Tamil	: Dr. A. Manikandan & Dr. M Saravanan
Telugu	: Dr L. Rajesh Chaudhary
Marathi	: Dr Vrushali Deshmukh & Mrs Pooja Ghonge
Gujrati	: Dr H R. Desai & Dr Vivek Shah
Oriya	: Dr B. S. Nayak
Kannada	: Dr Neelkanth Hiremani